मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यसुधा

वर्ष: 5, अंक 92,सितम्बर(प्रथम), 2020

खेलदिवस 29 अगस्त :

कोरोना से बचाव के साथ ही

रोकने होंगे खेलों से 'खेल' खेलते 'बड़े खिलाड़ी'

डॉ० घनश्याम बादल

आज 29 अगस्त है भारत में खेल दिवस होता है आज । राष्ट्रीय खेल हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद का जन्मदिन है इस का सबब । उनकी कलाइयों के जादू को सम्मान देने के लिए ही उनके जन्मदिन को भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है । भले ही आज भारत में हॉकी आधिकारिक रूप से राष्ट्रीय खेल हो लेकिन उसके प्रति न तो वह लगाव बचा है न हीं हॉकी टीम वह जादू कर पा रही है जो मेजर ध्यानचंद के समय में या उनके रिटायर होने के कुछ समय बाद तक दिखाई देता था । कह सकते हैं कि हॉकी की हालत भारत में आज बहुत अच्छी नहीं है वैसे देखें तो वर्तमान समय में हॉकी ही नहीं सारे खेल ही एक संकट के दौर से गुजर रहे हैं।

कोविड-19 संक्रमण के चलते हुए आज देश में ही नहीं पूरी दुनिया में खेल और खिलाड़ी दोनों की हालत पस्त है । संक्रमण की मारक क्षमता, अभी तक रूस के अलावा किसी भी दूसरे देश में वैक्सीन का न आना, दुनिया भर में करीब 8 करोड़ लोगों का संक्रमण का शिकार होना, अर्थव्यवस्थाओं का वैश्विक स्तर पर डूबने के कगार पर चले जाना, और इन सबसे बढ़कर सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों के चलते स्टेडियमों में दर्शकों का आना लगभग असंभव हो जाना । साथ ही साथ खिलाड़ियों में भी संक्रमण के खतरे के चलते हुए खेल गतिविधियां दुनिया भर में करीब करीब ठप पड़ी हैं । जहां कहीं थोड़ी बहुत हो भी रही है वहां दर्शक विहीन स्टेडियम बे मज़ा खेलों के गवाह बन रहे हैं।

कई देशों के खेल प्रशासकों ने इन खेलों के लाइव प्रसारण की सुविधाओं का लाभ लेते हुए अपने देशों में सीमित मात्रा में ही सही खेलों का आयोजन शुरू भी किया है लेकिन बिना दर्शकों के खेलने में न खिलाड़ियों को मजा आता है न हीं उनके अंदर पिछले रिकॉर्ड तोड़ने की वह ललक होती है जो दर्शकों से भरे स्टेडियम में आती है ।जितने भी फील्ड गेम हैं चाहे वह क्रिकेट हो, फुटबॉल हो, बेसबॉल हो, टेनिस हो या दूसरे खेल इनमें दर्शकों की उपस्थिति उनका शोर उनके द्वारा की जाने वाली हौसला अफजाई खिलाड़ियों में जोश भर देती है एवं उनमें खेलने का तथा कुछ कर दिखाने का एक अलग ही जज्बा पैदा होता है जो कोरोना संक्रमण की वजह से अब गायब हो गया है ।

तो खेलों की खराब हालत सबके सामने है, , 130 करोड़ की आबादी और दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भारत का खेलों की दुनिया में कोई उल्लेखनीय मुकाम नहीं बन पाया है ।ध्यानचंद सचिन, विश्वनाथ आनंद या सानिया मिर्जा , हर्षवर्द्धन राठौर अथवा विजेन्द्र या सुशील अथवा सानिया मिर्जा बबीता फोगाट, पी सिंधु जैसे कुछ खिलाड़ी व्यक्तिगत स्तर पर व अपने बल बूते पर दुनिया में भले ही पहचान बना पाए हों पर टीम स्तर पर क्रिकेट के अलावा दूसरे खेलों में हम ज्यादा चमकदार प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं ।

राष्ट्रीय खेल होने के बावजूद हॉकी ऊंचाई या नहीं छू पा रही है विश्व तो क्या एशिया में भी हम अब सिरमौर नहीं रहे हैं । फुटबाल तो बस मनोरंजन के लिए ही रह गया है , कबड्डी जैसे खेल यूरोपीय देशों की नीतियों के शिकार हो कर अंतर्राष्टीय , ओलंपिक खेलो से गायब होते जा रहे हैं । कुश्ती पर भी उनकी निगाहें अच्छी नहीं हैं यानि कहीं हम हैं नहीं और जहां हम उभरते हैं वहां अंतरराष्ट्रीय षड़यंत्र से बाहर हो रहे हैं । कूटनीतिक लिहाज से यह गलत नहीं ठहरता पर सवाल वही , कि हमारे खेलों के कर्णधार क्या कर रहे हैं ? हमारे संगठन क्यों अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारे खिलाड़ियों के हक नहीं बचा पाते हैं ? खेलो का स्तर आखिर क्यों नहीं उठ पा रहा है ? स्कूल , काॅलेज, खेल विद्यालय , कोचिंग संस्थान , खेल अकादमियां सब फेल क्यों हो रहे हैं खेलों को सही दिशा व मार्गदर्शन देने में ?

बदलते परिवेश एवं खेलों में आए बेहिसाब पैसे के चलते अब ‘‘खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब’’ का दौर बीत गया है , खिलाड़ी नवाब हैं , वें अमीर हैं , करोडपति और लोकप्रिय हैं , अधिकारी अरबपति हैं । अब खेलों में पैसे की कमी नहीं , पर खेलों में नेता एवं प्रशासक बड़े खिलाड़ी के रूप में एक अलग ही खेल खेलने में सफल हो रहे हैं भ्रष्टाचार घपलों व पक्षपात की वजह से खराब प्रदर्शन जारी है एक नाउम्मीदी हावी हो गई है और खेलों पर उचित ध्यान , योजना ,

नीति , समर्पण व ईमानदार प्रयास की कमी के चलते प्रदर्शन का स्तर लगातार गिरा है । खेल संगठनों में भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार और निहित स्वार्थ तथा राजनीति व राजनेताओं के बढ़ते कद व हस्तक्षेप ने खेलों का जमकर अहित किया है ।

खैर उच्चस्तर पर तो जो है सो है ही पर सवाल और भी है कि नीचे स्तर से भी हमें अच्छे खिलाड़ी नहीं मिल पा रहे हैं । स्कूलों में मां - बाप का एकमात्र लक्ष्य अपने बच्चे को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलवाने पर है जिसका मतलब उनके लिए केवल और केवल अच्छे अंक या ग्रेड़ तक सीमित है । वें उसी में बच्चे का भविष्य ढूंढते हैं और शायद वें गलत भी नहीं हैं क्योंकि हमारे यहां योग्यता का अर्थ केवल अकादमिक एक्सीलेंस जो बन गया है । उसीसे किसी का भी कैरियर बनता या बिगड़ता है , उसके पद पाने व पैसा कमाने का सीधा संबंध बनता है । खिलाड़ी केवल मनांरजन करने के सबब बनकर रह जाते हैं , खेलों के बल पर रोजगार पाने वाले बिरले ही भाग्यशाली निकलते हैं अन्यथा तो खेल में रमने वाले जीवन के चरम से गुजरते ही गरीबी , बेरोजगारी , अभावों के अंधेरे में खोने को विवश हो जाते हैं आज भी और जब तक ऐसा चलेगा खेल कैसे उबर पाएंगं ?

अगर सचमुच ही हमें खेलों को बढ़ावा देना है तो हमें नाइजीरिया, ताइवान, जमैका , क्यूबा , मैक्सिको व अफ्रीकी गरीब देशों के खेल स्ट्रक्चर को अपनाना होगा । वहीं चीन , जापान , जर्मनी , व यूरोपीय देशों जैसे सुविधाएं जुटानी होगी खेलों के लिए । अगर हम अधिक जनसंख्या को अपनी कमजोरी न बनाकर चीन की तरह ताकत में तब्दील कर पाएं तो कोई वजह नहीं कि हम भी विश्व स्तर पर एक खेल ताकत के रूप में न उभरें । और इन सबसे बढ़कर खेलों में 'खेल' खेलने वाले 'बड़े खिलाड़ियों' शिकंजा कसना होगा।

खेलो में आगे आने का यदि कोई अचूक मंत्र है तो वह है ‘‘कैच देम यंग’’ का मंत्र । जिसका मतलब है छोटी उम्र में ही खेलों में रुचि रखने वाले , स्वस्थ , मज़बूत शरीर च इच्छाशक्ति वाले बच्चों को चुनना होगा । स्कूल स्तर से ही उन्हे अच्छे से अच्छा प्रशिक्षण देना होगा , उन्हे बेहतर सुविधाएं मुहैया करानी होगी , उन्हे अच्छा कैरियर विकल्प व सुरक्षा देनी होगी । रोजगार की गारंटी खेलों की दुनिया में ऐसे प्रतिभाशाली बच्चों को लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाह सकती है जो इस वजह से खेल छोड़ देते हैं क्योंकि खेल से उनका परिवार नहीं चल सकता है ।

‘‘कैच देम यंग’’ की नीति की कामयाबी के लिए यह भी जरुरी है कि शिक्षा में अकादमिक के बराबर ही खेलो का भी ‘वेटेज’ रहे । बच्चे का मूल्यांकन करते वक्त खेल में उसके योगदान व उपलब्धि का वज़न बढाना होगा । एक दूसरे से ‘लिंकअप ’ वाले संस्थान बनाने होंगें जो दूसरे

संस्थान से आए युवा खिलाड़ियों की मदद करें उन्हे प्रशिक्षित करें । शैक्षिक की ही तरह खेलों में भी उपलब्धि वाले बच्चों को विद्यालय , क्लस्टर , संभाग , व राष्ट्रीय स्तर पर नकद पुरस्कार भी उन्हे प्रोत्साहित करेगें । उनके प्रमाण्पत्रों को भी केवल उनके ही संस्थान में नहीं वरन दूसरे संस्थानों में भी तवज्जो देना जरुरी है ।

खैर, राष्ट्रीय स्तर पर खेलों को बचाने के लिए एक दूरगामी योजना बनानी ही होगी जिसमें वर्तमान की साथ-साथ भविष्य का भी ख्याल रखा गया हो । नई शिक्षा नीति से उम्मीदें भी जगी हैं लेकिन फिलहाल तो सबसे जरूरी यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर कोरोना की मार से मरणासन्न अवस्था में आ गए खेल, सिस्टम एवं खेलों से मिलने मिलने वाली आय खो चुके खिलाड़ी दोनों ही संकट में हैं और हमें जल्द से जल्द कुछ करना होगा खेलों और खिलाड़ियों दोनों को बचाने के लिए।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें